जिन्दगी यू गुजार दी

ज़िन्दगी यूं गुज़ार दी

प्रेम सक्सैना 'अज़ीज़'

अनन्य प्रकाशन, दिल्ली

वितरक
यूनीक पब्लिकेशंस
3380, बका स्ट्रीट, हौज काज़ी, दिल्ली 110006 (भारत)

प्रेम सक्सेना 'अज़ीज़' / प्रथम संस्करण 1987
मूल्य 35/- आवरण अनीता दास
प्रकाशक अनन्य प्रकाशन, सी 6/128 सी, लारेंस रोड, नई दिल्ली 110035
मुद्रक नूतन आर्ट, दिल्ली 110006

ZINDAGI YUN GUZAR DI
by Prem Saxena Aziz *Rs 35/-*

बाऊजी व बउआ को

कुछ इन मोतियो के मुतअल्लिक

यह थोडे अरसे पहले की बात है कि बम्बई मे किसी मजलिस मे एक दिलचस्प गुफ्तगू के दौरान कुछ साहबान ने राय जाहिर की कि मौजूदा मौसीकी के शायकीन के लिये मौजू नगमात व गजलयात की कमी है। ऐसा मजमून जो आमफहम हो, मुश्किल अलफाज से मुबर्रा हो और सुनने वाले के दिल मे घर कर जाये, शादो नादर ही हाथ लगता है।

मेरी नाक़िस राय मे जो इन्तखाब यहा पेश किया जा रहा है वो इस खिला को सरहन पूरा करता है।

मुसन्निफ प्रेम सक्सेना 'अजीज' न सिर्फ एक हरदिल अजीज इन्सान हैं बल्कि वह चालीस साल से जाईद से एक खुशगुल मौसिकार रहे हैं। जिनके कितने ही गाने फिल्म इण्डस्ट्री ने नवाजे और मक़बूल हुए। उनकी लिखी हुयी 'होलिया' तारिफ की मोहताज नही हैं।

अजीज की आवाज मे एक तडप और कलाम मे एक सोज और सादगी है जो दिल मे तीर की तरह उतर जाती है। एक ऐसी गहराई है जिसका कुछ अन्दाजा उसम डूब कर ही हो सकता है।

मुझे उम्मीद है के शायकीन के लिये यह मजमुआ कारगर साबित होगा और ऐसी कमी जिनका जिक्र मैंने इब्तदा म किया था पूरी करेगा।

ऐसा महसूस होता है कि अजीज ने जिन्दगी यू गुजार दी' की जो नायाब मोतियो की माला अपने गले मे पहनी हुई थी उसे तोड दिया और मोती बिखर गये ताकि कद्रदान उन्ह लूट लें और लुत्फ अन्दोज हो।

आर के कायस्था

जिंदगी मे कुछ ऐसे मुकाम आते है जब कोई पेश नही चलती, कोई तदबीर कारगर नही होती, तकदीर के आगे सर झुका लेना पडता है। एक लाचारी और मजबूरी का आलम छा जाता है और दिल तडफ कर रह जाता है—कुछ कहना चाहता है लेकिन जमाने से डरता है कुछ फिर भी कह लेता है और कुछ छुपा लेता है। जो छुपा लेता है वही जुबा बन जाती है और लब्जो मे शायर के बया हो जाती है।

मैं नौ साल का था मेरठ के नानकचद हाई स्कूल की चौथी जमात मे बैठा हुआ था—जुलाई का महीना था—कि अचानक ठडी हवा के एक झोके ने आकर मुझे छू सा लिया—खिडकी से नजर बाहर गई—देखा कि काली घटा उमडती चली आ रही है—दिल मे एक उमग जाग उठी, क्लासरूम बहुत दूर हो गया। लगा वो घटा मुझे बुला रही है साथ उड चलने को—एक सिरहन सी महसूस हुयी—और क्लासरूम वापस आ गया। लेकिन दम घुटने लगा। क्या मैं अपनी कैद से रिहा हो कर बादलो के साथ नही खेल सकता? बस कुछ ही लम्हो म टूटे फूटे लब्ज आडी तिरछी लाइना मे मासूम उम्र के जजबात का इजहार करने लगे। स्कूल की छुट्टी हु यी लेकिन मैं उस बखुदी क आलम से निजात ना पा सका। मुझे गान का बहुत शौक था बस अपने लब्जो को गान लगा। मायूसी कायम थी क्यू कि बादल जा चुके थे।

वक्त गुजरता गया—मैं न जानता था कि जुदाई व त हाई क्या है, दद व मुहब्बत का अहसास न था। यकायक हालत के मोड न मेरठ छुडा दिया। बाऊजी की नौकरी दिल्ली म लग गयी। बचपन का घर और साथी छूट गय। एक दास्त जा मुझे बहुत प्यार करता था राने लगा—जुदाई का एहसास हुआ—मैं भी रोने लगा। दद गीतो की शक्ल मे नमूदार होन लगा। फिल्मी गीत, गजल गुनगुनाता था। बोल याद न रह तो गढ लेता था। सभी को मेरा गाना अच्छा लगता था—कभी कभी अपना लिखा गीत अपनी ही तर्ज मे सुनाने लगा। तारीफ होती थी हौंसला बढता गया—लेकिन काई जानता न था कि मैं लिखने भी लगा हू।

फिर वक्त ने करवट बदली बाउजी को बेहतर नौकरी मिली और हम जमना किनारे 29, श्री राम रोड की काठी म आ गये। कुदरत के नज़ारे जमना के किनारे पेड फूल, हवा घटा, चाँद-तारे, मेरे तन बदन म समाने लगे। एक अजीब बात थी, मैं जमना किनारे अकेला सारी सारी रात बैठा रहता था बिना किसी को पता लगे—लेकिन किसी अनजानी सी चाहत मे। शायद ये ही दिल का फरेब था, गीतो मे अब ज्यादा जान थी—सुनने वाला की तारीफ कसौटी थी।

सन् 1955 म उस वक्त के मशहूर म्यूजिक डायरेक्टर नाशाद साहब दिल्ली तशरीफ लाये—एक दोस्त की मेहरबानी से उनस मुलाकात का मौका मिला। 'बदली स निकल के चांद आया' गजल उन्ह सुनायी—उन्होंने बम्बई आने का न्यौता दिया। और मैं बम्बई पहुच गया। उनके म्यूजिक डायरेक्शन मे 'बडा भाई' फिल्म मे गीत लिखने का मौका मिला। पहला ही गीत 'चोरी चोरी दिल का लगाना बुरी है, दिल को लगा के पछताना बुरी बात है' जोर-शोर से हिट हो गया।

अफसोस क़िस्मत को मजूर कुछ और ही था। दिल्ली आना पडा—तब से कुछ अपनी, कुछ जगबीती लिखता हू, गाता हू और रो लेता हू। होली हर साल आती है किसी भूली बिसरी याद को लेकर लेकिन कभी खत्म न होने वाली एक इन्तजार दे कर चली जाती है। इसलिय मेरी होलिया म सुख का सदेश तो है लेकिन दद भरे स्वरो म।

प्रेम सक्सेना मजीज
मार्च, 1987

3485, हौज काजी,
दिल्ली 6



मेरे दर्दे दिल की भी एक दास्ता है
मगर सुनने वाला ना कोई यहा है

य माना बसेरा मिला है चमन मे
मगर सूना सूना मेरा आशिया है

उलझता ही जाता हूँ म गर्दिशो मे
मेरी बदनसीबी का आलम जवा है

10289

जमाने से कह दो सताये ना मुझको
मुझे जिन्दगी की तमन्ना कहाँ है

अज़ीज़ आने वाला नही साथ कोई
तू ही अपनी मजिल तू ही कारवा है



जलूगा मैं भी शमा आज साथ-साथ तेरे
गिला रहे ना रहे दिल मे कोई बात तेरे

हँसा दिया था नजारो ने एक दिन मुझको
रोऊँगा आज उजडती बहार साथ तेरे

बडा हसीन था अरमान तेरी सोहबत का
मिला हूँ खाक मे आये जो हाथ हाथ तेरे

ए हम सफर तू ही मजिल है तू ही राह मेरी
मेरी नजर के उजाले है साथ-साथ तेरे

अजीज दर्द मुहब्बत का ये तकाजा है
सहर को भूल के अब शाम ही है साथ तेरे



लिखा है जो मुकद्दर मे मिटाया जा नही सकता
जिसे चाहा उसे अपना बनाया जा नही सकता

गरीबी ने गला घोटा हमे नीलाम कर डाला
ये हाले बेकसी होटो पे लाया जा नही सकता

चले हैं अपने हाथो ही लुटाने जिन्दगी अपनी
(दिवाना पन) है ये कसा बताया जा नही सकता

अमन था दोस्ती थी हर गुले गुलजार मे पहले
नया काँटा अब भी नफरत का निकाला जा नही सकता

अजीज़ अब और फर्ज़े दोस्ती की बात रहने दो
सबक सबको मुहब्बत का पढाया जा नही सकता



अब तो जिगर की आग बढे तो मजा मिले
या फिर तडप के कोई मिले तो मजा मिले

मेरी जिन्दगी की खैर मना कर कोई चला
मेरी मौत आ के रोके उसे तो मजा मिले

मैं बेखुदी मे चीख के बस तेरा नाम लू
तू भी मुझे यू याद करे तो मजा मिले

तेरे दिल मे एक मै ही हूँ कोई दूसरा नही
ये फैसला तू फाश करे तो मजा मिले

मैं भूल कर भी तेरी भला याद क्यूँ करूँ
तेरी याद आप आ के मिले तो मजा मिले

मुझे ले चली है तेरी मुहब्बत की जुस्तजू
तू महवे इतजार मिले तो मजा मिले

ये क्या के मिल गये तो लगे हाल पूछने
फुसत से वो अजीज मिले तो मजा मिले



शुक्रिया आपका हजरात किये जाता हूँ
आपके प्यार की सौगात लिए जाता हूँ

मैं अकेला हूँ सफर जाने है कितना बाकी
पर गिरे जाते है परवाज किये जाता हूँ

वक्ते रुखसत है के आँखो मे छुपा लो आँसू
मुस्कुरा दो के मैं फरियाद किये जाता हूँ

आओ सीने से लिपट जाओ गले लग जाओ
दम निकल जाये ना, आवाज दिये जाता हूँ

हूँ मुखातिब मैं तुम्ही से ए हसी दोस्त मेरे
मिलते रहना के मैं दरख्वास्त किये जाता हूँ

कोई शिक्वा ना शिकायत है किसी से भी अजीज
मैं जमाने की वफा साथ लिये जाता हूँ



रिश्ते अपने तो बस अब कहने कहाने के हुए
हम तो अपने भी नही आप ज़माने के हुए

अब कहाँ कौन मुकाँ ढूढने जायें उनको
उनके मिलने के पते राज ज़माने के हुए

मुस्कराते ही रहे उनके मुकाबिल हम तो
गो के मज़र तो बहुत अश्क बहाने के हुए

अपना जी उनके बिना लगता नही है लेकिन
वो तो शौकीन नये यार बनाने के हुए

आज तो पी ही नही पीने का इल्ज़ाम ना दो
हाँ मुहब्बत मे खतावार पिलाने के हुए

उनका मतलब जो पडा बात प्यार से कर ली
वक्त निकला तो तरफदार जमाने के हुए

आप बिगडे या हसें आपका जमाना है
हम गुनहगार ये दिल आप पे लाने के हुए

फिक्र सुबहो से ही अब शाम की होती है अज़ीज़
के निगेहबान बहुत उनके ठिकाने के हुए



आपने कैसी कसम आज दिला दी हमको
हम तो पीते ही नहीं और पिला दी हमको

क्या कहे आपके इसरार का जवाब नही
पी के आए थे बहुत और पिला दी हमको

शुक्रिया आपका अब किस तरह कसे करें
जिन्दगी भूली हुई याद दिला दी हमको

उनके घर से जो चले उनके ही घर पे पहुचे
अपनी ड्योढ़ी ना मिली इतनी पिला दी हमको

चेहरे चेहरे मे नही फर्क नजर आता अजीज
पूछो साकी से कोई कितनी पिलादी हमको



आंख तरस गई है दीदार को तेरे
जाने क्या हो गया है अब प्यार को तेरे

सांसे रुकी हुई हैं बस इंतज़ार मे
मौत आये भी तो कैसे बीमार को तेरे

पत्ता नही ना फूल ना कांटा मैं गर्द हूँ
बेआब हो रहेगा गुल्जार को तेरे

शायद के आते जाते ही मिल जाये तू कहीं
दीवानावार जाता हूँ बाजार को तेरे

बायें से चल के दायें, दायें से बायें को
फिरता हूँ ढूढता दरो दीवार को तेरे

ए अज़ीज रोये जायेगा या देगा भी पता
पहचानता है कौन यहाँ यार को तेरे



तुम क्या हो मेरे वास्ते कैसे बताऊँ मैं
दिल हो या रूहे दिल ये कैसे बताऊँ मैं

आहों की गर्म लौ पे सुलगता है तनबदन
हैरां हूँ तुमको सीने मे कैसे लगाऊँ मैं

बाहों मे अपनी खींच लो अल्लाह के वास्ते
कितना है वक्त बाकी ये कैसे बताऊँ मैं

फुर्सत से जो मिलो गमे फुरकत सुनाऊँ मैं
दिल पे है बोझ कितना ये कैसे बताऊँ मैं

मैंने तो रिश्ता जान का जोड़ा था ए अज़ीज
तुम जान ले के छोड़ोगे कैसे बताऊँ मैं



ये सदा उठेगी रात दिन बेकरार मेरे मजार से
जो मिला सके ए खुदा मिला मुझे आज फिर मेरे यार से

ये धुआ सा उड के कहा चला मेरी हसरतो को समेट कर
मुझे दीजो आ के खबर जो तू मिले दामने दिलदार से

था गुमाँ के मेरे प्यार का अहसास कुछ उसको भी है
लेकिन कभी रोका नही उसने मुझे इसरार से

मैंने जिन्दगी य गुजार दी ज से याद ही ना हो प्यार की
मुझे क्यू गिला हो खिजां से अब मुझे क्या मिला है बहार से

ये नसीब ही की तो बात है मेरा दिल उसी पे निसार है
जिसे गुल बहुत ही 'अजीज है मकसद नही किसी खार से



तेरी सूरत से मुझको प्यार हुआ
दिलो जाँ तुझ प सब निसार हुआ

होश अपने हवास खो बैठा
जब से जालिम तेरा दीदार हुआ

किसी बदली मे बिजलियाँ भी थी
मेरे दिल पे उ ही का वार हुआ

रात सारी चराग रौशन थे
तेरे घर किसका इन्तजार हुआ

प्यार की एक नजर कभी ना मिली
तुझसे मिलना हजार बार हुआ

खाये जाती है दूरियाँ तुझस
अब तो जीना भी नागवार हुआ

तू उधर को चला इधर दिल फिर
तुझसे मिलने को बेकरार हुआ

मेरी हालत पे लोग हँसते है
तू बता दे क्यू अश्कबार हुआ

दफन कर दे मुझे मुहब्बत से
जीते जी तो ना तुझको प्यार हुआ

तू तडपता ही रह गया वो अजीज
जाने किसके गले का हार हुआ



मैं मुंतजर हूँ के मेरी तरफ निगाह करो
बस आखरी ये मेरे वास्ते गुनाह करो

सुनाये जाओ कोई प्यार की कहानी मुझे
किसी तरह से शवे गम की तुम सुबाह करो

के मौत आये तो आये तुम्हारे पहलू मे
दुआ ये मेरे लिए मेरे खैरख्वाह करो

बसा सकोगे ना तुम मेरे आशियाने को
यू बेरुखी से उमीदो को ना तबाह करो

अजीज लाखो हो लिपटे हुए है गम दिल से
भुला भुला के भी किस किस से अब निबाह करो



फिर आप मेरे दिल को तड़पाने चले आये
बुझते हुए शोलो को दहकाने चले आये

क्या शय ये मुहब्बत है क्या शय ये जवानी है
क्यू मुझसे ना समझ को समझाने चले आये

फुसत के है ये किस्से फुसत की है ये बातें
दम भर को मुहोब्बत क्यू जतलाने चले आये

गरो की इनायत के रग तुम प नुमाया है
क्यू मुझको ये नजराने दिखलाने चले आये

गुरबत से मेरी डर के उमरा के हो गये तुम
नफरत के नगीनें क्यू दमकाने चले आये

तुम जानते हो मेरे ना हो सकोगे फिर क्यू
तकदीर के पचो को सुलझाने चले आये

ए अजीज जिन्दगी ने दिया खाली जाम तुझको
मैयत प तेरी रोने मयखाने चले आये



ए काश मैं किसी के दिल के करीब होता
मेरा भी कोई हम दम अहले नसीब होता

दिल मेरा भर के आता आसू कोई बहाता
रग आश्की का (दिल कश) कितना अजीब होता

मेरी वफा का कोई अजाम हो नही है
रुस्वाईयो का मेरी कोई रकीब होता

मैं क्या कहूँ के मुझको कुछ भी नही मयस्सर
समझाने वाला मुझको कोई अदीब होता

खामोश देखता हे मेरे प्यार की तबाही
ये सितम ना होता जो तू मेरा हबीब होता

है जिसके पास दौलत दुनियां जहान उसके
मेरा अजीज कोई मुझ सा गरीब होता



जाने क्या हो गया है आज तुम्हें क्यू मुहब्बत जताये जाते हो
साफ कह दो जो बात है दिल मे क्यू पहेली बुझाये जाते हो

छोड के यू चले गये मुझको जैसे मिट्टी का मैं खिलौना हूँ
क्या कोई चोट और देनी है जो मेरे पास आये जाते हो

आपकी राह पे लगी आँखें जाने कब बन्द हो गईं आँखें
मुझको आदत है अब अंधेरो की रौशनी क्यू दिखाये जाते हो

तुमने आखिर कहीं तो मुडना है मैंने तन्हा सफर ये करना है
चन्द कदमो की रस्म है ये तो क्यू मेरे साथ आये जाते हो

गर्मिये इश्क है अगर बाकी दो कदम चल के आप आ जाओ
दूर बैठे हुए इशारो से क्यू मुझी को बुलाये जाते हो

आपसे मेरी एक गुजारिश है जिन्दगी मेरी अब नुमायश है
जीने वालो के साथ हो लो अजीज मुश्किले क्यू बढाये जाते हो



नजर बचा के भी जो तूने फिर इधर देखा
लगा के मैंने वफाओ मे फिर असर देखा

थका भी देख के मुझको कदम बढाये गया
कहो किसी ने क्या ऐसा भी हम सफर देखा

बहाना कोई ना था तुझसे आ के मिलने का
के रोज दूर ही से तेरा रह गुजर देखा

जनूने इश्क कहूँ या के दिल की नादानी
चला उधर ही तेरा साया बस जिधर देखा

खबर हुई के तू ड्योहढी पे आ गया लेने
कभी य तुझको नही पहले मुतजर देखा

सुनाऊँ कसे भला हाले बेकसी अपना
अजीज उसको हमेशा ही बेखबर देखा



कसे कटेगी रात ये बतला तो जाइये
मुझे रोशनी सहर की दिखला तो जाइये

तर्जे वफा के जिक्र पे करवट क्यू फेर ली
समझा नहीं मैं कुछ मुझे समझा तो जाइये

शायद अब आपको है मेरी आरज़ू नही
कहिये ना खुद किसी से कहला तो जाइये

दिल डूबने लगा, है दम टूटने को है
बेकस का ये जनाजा उठवा तो जाइये

नफरत जदा अजीज है नफरत ही कीजिये
नफरत की एक निगाह से तड़पा तो जाइये

हुआ करे के वफा आपकी किसी के लिए
हमे तो प्यार मे जीना है आप ही के लिए

शिकायतो का ना मौका मिले किसी को भी
ये रजोगम के तो नगमे हैं हर किसी के लिए

झुका के सजदे मे सर को खुदा से ज़िद की है
दुआयें मांगते मर जायें आप ही के लिए

ना रोक हाथ है शिद्दत बला की ए साकी
ये शामे गम है नही आज दिल्लगी के लिए

वो हमको गैर समझते है बदनसीबी है
बढाये जायेंगे हम हाथ दोस्ती के लिए

मिला के खाक में मुझको क्यू रोये जाते हो
छुपा लो आंसू किसी और की खुशी के लिए

अज़ीज़ दिल मे अंधेरा है और मायूसी
के हम चराग जलायें क्यू रोशनी के लिए



बस और कहने से अब बात बेमजा होगी
बढ़ूगा आगे मगर तेरी जब रजा होगी

हैं तुझ पे बोझ बहुत और एक मैं भी हूँ
गिरा दे मुझको नजर से यही वफा होगी

दिया है गैर का रुत्बा बड़ी इनायत है
बता दे और भी क्या मेरी अब सजा होगी

तरस रहा हूँ मैं कब से तेरे करम के लिए
कुबूल भी क्या कभी मेरी इल्तजा होगी

मुझे था इल्म नही यार क्या मुहब्बत भी
तेरे करीब बस एक गर्ज शौकिया होगी

मैं जी रहा हूँ मगर जिन्दगी से हो के जुदा
ना जाने किसकी मुझे मिल रही दुआ होगी

अजीज दिल मे तेरे आग जो लगा के गई
ना जाने किससे लिपट आई वो घटा होगी

फिर मिलेंगे आपसे माफ खता कीजिये
वक्त बहुत हो चुका आज विदा कीजिये

बैठ के क्या देखते हो मेरी सूरत हुजूर
आखरी ये रस्म है उठिये अदा कीजिये

आओ कहें अलविदा और गले लग जाये यू
जिस्म अगर हो जुदा दो जान जुदा कीजिये

दोस्तो की दुश्मनी भूलने मे है मजा
दुश्मनो की दोस्ती याद सदा कीजिये

आपके ही दम से है दम मेरे जनून मे
ये जुनू बढे चढे ऐसी दुआ कीजिये

मैकदो की रौनकें मयकशो के दम से है
वरना सकिया मेरे यादे खुदा कीजिये

जाम मे उतार लू जलवा यार का अजीज
ऐसा जो नशा करे जाम अता कीजिये



राहे फरेबे इश्क से बचना ना आयेगा
रुक जाइये जो चल पडे रुकना ना आयेगा

बागे वफा मे फूल कम कांटे है बेशुमार
दामन बचा के आपको चलना ना आयेगा

जिस हाल मे भी हूँ मैं हूँ लिल्लाह ना पूछिये
सुनके जो रो दिये तो फिर हँसना ना आयेगा

पीऊँगा आज जो मिले दस्ते नसीब से
पीये बगैर तो मुझे जीना ना आयेगा

पिन्हां हैं दिल मे सैकडो अतिशफिशा अजीज
लेकिन क्या आसूओ तुम्हे छुपना ना आयेगा

1

आज तबियत आपकी अच्छी नही
या मेरी मौजूदगी अच्छी नही

मिल भी लेना चाहिये हस कर कभी
मुस्तकिल नाराजगी अच्छी नही

उनकी नजरो मे गिरा जाता हूँ मैं
रोज की ये मयकशी अच्छी नही

होती हैं औरो से बातें तो हजार
मुझसे क्या एक बात भी अच्छी नही

है मजा ना करके फिर कुछ मान लो
छूटते हो हाँ कहो अच्छी नही

कह दिया एक बार और सौ बार भी
तुम नही तो जिन्दगी अच्छी नही

दे दिया दिल ही उठाकर गैर को
आपकी दरिया दिली अच्छी नही

ठहरो पर्वानो कुछ आओ होश मे
शम्मा की ये दिलकशी अच्छी नही

देखने मे क्या मगर फितरत है क्या
जुल्फ बलखाई हुई अच्छी नही

ये जवानी सर्द मौसम हाय हाय
ऐसे मे तन्हाई भी अच्छी नही

प्यार से दो लब्ज भी कह दो अजीज
हर घडी तानाजनी अच्छी नही



तुमको पाने की तो मैं कोशिश करूँगा
तुम ना चाहो भी तो मैं कोशिश करूँगा

रोने को कह दो तो रो दू जार जार
मुस्कुराने की तो मैं कोशिश करूँगा

बात दिल की चेहरे से पहचान लो
लब पे लाने की तो मैं कोशिश करूँगा

मेरे वादे का ना करना एतबार
आजमाने की तो मैं कोशिश करूँगा

कह नही सकता क्या होगा हश्रे दोद
होश रखने की तो मैं कोशिश करूँगा

रोज दिखलाते हो मुझको आइना
सब्र रखने की तो मैं कोशिश करूँगा

जिद है पीना छोड दो एक दम 'अजीज
रफता रफता ही तो मैं कोशिश करूँगा

बात छेड़ो नही कोई तकरार की
रात मुश्किल से आई है ये प्यार की

तुम भी मदहोश पीये हुए से हो कुछ
अपनी नीयत भी ज़ालिम है इसरार की

खाओ ऐसी सुहानी घडी पे रहम
माफ कर दो पुरानी खता यार की

वक्त थोडा है मेरी तरफ देख लो
ले ना जाऊँ ये हसरत भी दीदार की

बन के बैठो ना तस्वीर हँस दो जरा
कब तलक ज़िद रहेगी ये सरकार की

रुख से गेंसू हटा लो ना ढाओ सितम
बढ रही है शरारत गुनहगार की

यू तो शिक्वे मुहब्बत मे होगे अज़ीज
बात रखते नही दिल मे दिलदार की



जख्मे दिल का निशाँ नही होता
जी जले तो धुआ नही होता

ताने सुन सुन के भर गया है दिल
अब गुजारा यहाँ नही होता

मिल ही जायेगा वो विराना भी
अपना कोई जहा नही होता

कोई कहता है कोई सुनता है
जिक्र तेरा कहाँ नही होता

बागे जन्नत है बन्दगी तेरी
इसमे मौसम खिजा नही होता

छेड जाती ना जो नजर तेरी
मुझको हरगिज गुमा नही होता

गर महोब्बत मुझे भी मिल जाती
दिल मे कोई तुफा नही होता

आओ हसरत मिटा लें आज अपनी
वक्त फिर से जवाँ नही होता

जो किसी दिल से खेलता है अजीज
उसका दीनो इमा नही होता



जुदा रह लो कुछ दिन महोब्बत रहेगी
महोब्बत से मिलने की चाहत रहेगी

हर वक्त शिक्वे गिले और शिकायत
किसी की भी तुमको ना आदत रहेगी

बना के फ़रिश्ता मुझे हक ना छीनो
मुझे तुमसे चाहत की हसरत रहेगी

तुम्हारी जुबा पे नही ज़ोर मेरा
मेरी गुफ्तगू मे नफासत रहेगी

कहो बदगुमा बेअदब बेसलीका
मेरी हस के मिलने की खसलत रहेगी

लगाये रहो अपने सीने से मुझको
ये ख्वाहिश मेरी ताकयामत रहेगी

तेरे हुक्म से है लहू मे हरारत
हरारत मे तेरी इबादत रहेगी

तेरे नाम का जाम पीता रहूँगा
ए मौला तेरी जो इनायत रहेगी

तुम्हारी अदाओ का आशिक हूँ मैं तो
ना समझो के मुझमे शराफत रहेगी

छुडा लो अगर चाहो दामन छुडा लो
मेरी हरकतो मे शरारत रहेगी

मजीज़ अब तू खुद अपने बस मे नही है
तेरे दिल पे उनकी निज़ामत रहेगी



तुम आज पुरानी बातो को एक बार करो फिर से
गर मुझसे मुहब्बत है तुमको इकरार करो फिर से

बिन पीये सरूर आ जाता है जब गया वक्त याद आता है
लौट आयें घडी भर गुज़रे दिन वो प्यार करो फिर से

क्यू दूर सिमट कर बैठे हो क्या बात है क्या डर है तुमको
रुस्वा ना तुम्हे होने दूंगा एतबार करो फिर से

बाहो मे बाहे उलझा कर रुखसार पे जुल्फें बिखरा कर
ललचाई नजर से हसरत का इज़हार करो फिर से

ढल गई शाम अब जाना है लेकिन अज़ीज़ कल आना है
हाँ करवाओ कस्मे देकर इसरार करो फिर से



जुदा [illegible] कर चला
महोब्ब [illegible] जुदा कर चला

हर [illegible] कर दीजो
किसी [illegible] दा कर चला

बन [illegible] ही मन्ज़िल है
मुझे [illegible] दा कर चला

तु [illegible] पैमाने सब
मे [illegible] दा कर चला

[illegible] इतना समझा
[illegible] दा कर चला

जलता बुझता मेरा दिल तो एक शोला बन गया
आग पहलू मे दबाये एक कोला बन गया

जब तड़प उठती तो रो लेता जी भर के एक बार
फूट कर फिर फूट पडता है फफोला बन गया

सिसकियाँ तेरी कही सुन ले ना ये दुश्मन जहाँ
उसकी रुस्वाई का दिल तू तो झमेला बन गया

शाम पे खिलने लगा है चांद पहली रात का
जाने मत दे यार को मौसम नशीला बन गया

जी के अब तू क्या करेगा जान जाये जाये भी
वो अजोज़ अब जान के सब राज़ भोला बन गया



मेरा यार अब जो हो सो हो तेरा फायदा कर चला
बोझ था तुझ पे रिश्ता मुझसे वो रिश्ता मैं जुदा कर चला

मेरी मैयत रोक के रस्ते मे ना रुस्वा कर दीजो
प्यार तेरा लौटा कर तुझको तेरा कर्जा अदा कर चला

तुझ पे है अंजाम सफर का तू राही तू ही मन्जिल है
मैं तो आखिर थक कर तेरी सारी यादें विदा कर चला

जानो दिल ईमान महोब्बत डूब गये पैमाने मय
सीने में सुलगायें हसरत मैं खाली मैकदा कर चला

कुदरत का ये खेल अजब था मैं अजीज इतना समझा
मुझको तुझसे प्यार बहुत था दुनिया तुझ पे फिदा कर चला



जलता बुझता मेरा दिल तो एक शोला बन गया
आग पहलू मे दबाये एक कोला बन गया

जब तडप उठती तो रो लेता जी भर के एक बार
फूट कर फिर फूट पडता है फफोला बन गया

सिसकियाँ तेरी कही सुन ले ना ये दुश्मन जहाँ
उसकी रुस्वाई का दिल तू तो झमेला बन गया

शाम पे खिलने लगा है चाँद पहली रात का
जाने मत दे यार को मौसम नशीला बन गया

जी के अब तू क्या करेगा जान जाये जाये भी
वो अजीज़ अब जान के सब राज़ भोला बन गया





है वक्त थोडा कोई तो आये ये दम अकेले निकल ना जाये
शमा पे कुछ है शबाब बाकी कही अंधेरा निगल ना जाये

मिलूगा तुझसे मैं ख्वाब बनके ए यार तेरा ख़याल बन के
तू मुझको ऐसे ही देखता रह ये मुस्कुराहट बदल ना जाये

हर एक नजर से बचा के रखा ए दर्द तुझको छुपा के रखा
मैं तेरी ख़ातिर कभी ना रोया तू अश्क बन कर उबल ना जाये

ये आग कैसी सुलग रही है जो तन बदन से उलझ रही है
मैं नींद मे हूँ जलाने वाले मेरा तसव्वुर पिघल ना जाये

मैं तुझ पे सदके या जान कर दू ये जान तो क्या ईमान कर दू
मगर ये डर है अजीज हाथो से तेरा दामन फिसल ना जाये



लग जाओ फिर आज गले अब पल दो पल का साथ है
छूट जायेगा जाने किस दम हाथो मे जो हाथ है

कुछ राहत सी मिल जायेगी तुम आ बैठो पास मेरे
वरना खाने को पडती है ये तूफानी रात है

राज नही जानेगा कोई ना कोई पूछेगा ही
कौन था ,मैं क्या किस्सा था ये बस अपनी बात है

कर देना तुम माफ मेरी बे अदबी और गुस्ताखी को
भूल गया था मैं क्या हूँ और क्या मेरी औकात है

क्यू पूछा था क्या चाहते हो क्यू अजीज ये बात करी
मैंने माँगा प्यार मिली मुझको गम की सौगात है

बदली से निकल के चांद आया
मेरे लब पे तेरा फिर नाम आया
फिर पहुचा तेरे कूचे मे दिल
और लौट के फिर नाकाम आया

मजबूरियाँ इतनी हैं के अगर
दिल चाहे भी तो मैं आ ना सकू
क्यू शाम की तन्हाई मे सितम
ढाने को तेरा पैगाम आया

हर सुवाह हुई बेचैनी मैं
हर शाम मेरा दिल घबराया
दिन रात जला बेताब जिगर
दम भर ना मगर आराम आया

हर तरफ उदासी का आलम
मायूस उमीदो का मातम
मंजिल से मिली ना राह मेरी
कोई ना सितारा काम आया

ए अजीज ये महफिल कैसी है
दस्तूर यहाँ का कैसा है
है एक ही साकी पर तेरे
हिस्से मे क्यू खाली जाम आया



जीने के लिए तो प्यार चाहिये
मैं प्यार कहाँ से लाऊँ मैं प्यार कहाँ से लाऊँ
नैया को मेरी पतवार चाहिये
पतवार कहाँ से लाऊँ मैं प्यार कहाँ से लाऊँ

काँटा हूँ मैं फूलो से जुदा
नजरो से गिरा दुनिया से बुरा
काँटे को गुलो का हार चाहिये
मैं हार कहाँ से लाऊँ मैं प्यार कहाँ से लाऊँ

गम एक नही सौ सौ हैं मुझे
नस नस मे सितम के तीर चुभे
गम जदा हूँ मैं गमख्वार चाहिये
गमख्वार कहाँ से लाऊँ मैं प्यार कहाँ से लाऊँ

खामोश है दिल के अफसाने
रोते हैं मेरे संग वीराने
हसने के लिए गुलजार चाहिए
गुलजार कहाँ से लाऊँ मैं प्यार कहाँ से लाऊँ

वक्त तन्हा गुजर रहा था मेरा
क्यू ज़माने ने तेरा नाम लिया
मुझसे किसकी ये दुश्मनी निकली
हाय कैसा ये इंतकाम लिया

दरो दीवार ने करी साज़िश
सबने की मिल के तेरी फरमाईश
मै ना घर का रहा ना बाहर का
बेजुबानो ने तेरा नाम लिया

मैं बुलाया तो सब जगह ही गया
और नवाज़ा भी सब तरह ही गया
तेरी शोहरत कदम बढा के चली
मेज़बानो ने तेरा नाम लिया

आज आखिर शराब पी मैंने
दोस्ती इस ज़हर से की मैंने
हँस के कश्ती हटा ली साहिल से
तो तूफानो ने तेरा नाम लिया

मैंने मज़िल से वास्ता तोडा
तेरी राहो से रास्ता मोडा
तेरी खातिर अज़ीज़ छोडा चमन
तो विरानो ने तेरा नाम लिया



दो घूट पी लीं बहकने लगे
के जैसे हमे कोई गम ही नही
गैरो की महफिल मे यू आ गये
जमाने की जैसे शरम ही नही

उनकी नजर का तो कहना ही क्या
जिस रुख उठी एक नशा छा गया
उनकी नजर से जो पी थी कभी
उतर जायेगी ये वहम ही नही

उनकी गली का मोड आ गया
चढते नशे का तोड आ गया
माना के रुकना मना है यहाँ
लेकिन है बढते कदम ही नही

घूम आये सारा शहर आज हम
जितने मिले साथ ले आये गम
ले के जो बैठे जमाने के गम
तो जाना के कुछ अपना गम ही नही

*

मैं अपने दिल का दर्द बयाँ किस तरह करूँ
पिन्हाँ जिगर की आग अयाँ किस तरह करूँ

मुझको तो रास हैं गमे फुरकत की स्याहियाँ
हसरत की रौशनी में नुमाँ किस तरह करूँ

दस्ते नसीब से है गमे आश्की मिला
अल्लाह के इस करम पे गुमाँ किस तरह करूँ

तू भी था बेकरार कभी मेरी चाह मे
गुजरा हुआ वो वक्त जवाँ किस तरह करूँ

तू खुश रहे ए दोस्त मगर तन्हा तुझसे दूर
ए अजीज खुश रहूँगा जुबा किस तरह करूँ

अब ना रोको के जाम आने दो
मेरी महफ़िल में शाम आने दो

मैं चला दूर दूर मंजिल से
अब ना कोई कयाम आने दो

जिन्दगी मुन्तज़र रही उनकी
मौत का अब पयाम आने दो

मुझसे पूछो ना कोई भी कुछ भी
लब पे उनका ही नाम आने दो

जान बख़्शो अज़ीज़ की यारो
देर कुछ तो आराम आने दो

एक भूली बिसरी सी बात याद आ गई
आपसे वो पहली मुलाकात याद आ गई

झोका एक हवा का दिल से छेडछाड कर गया
पर्दा वक्त का उतार बेकरार कर गया
खोई खोई आँख से आँसू एक निचुड गया
चीखती वो बिजली बरसात याद आ गई

ऊँची ऊँची घास और खेत वो हरे हरे
शाम सारी ढल गई थी राह मे खडे खडे
एक तडप सी उठ रही है आज फिर पडे पडे
कैसे वो गुजारी साथ रात याद आ गई

थोडी सी शराब का नशा कमाल कर गया
सामने दीवार पे नजारा एक उभर गया
चेहरा माहताब जसा आपका निखर गया
प्यासे इन लबो की करामात याद आ गई

पत्ता एक ड्योहडी के पास से सिकर गया
जाने किस खयाल से मैं चौक के सिहर गया
तुम करीब थे हसीन ख्वाब वो किधर गया
मैं कहा हूँ कैसी ये बात याद आ गई

एक भूली बिसरी सी बात याद आ गई



अब तो ख़फा हो गये सनम
किससे लिपट कर रोयें हम
एक घुटन सी है सीने मे
किसकी गली में तोड़ें दम

मजिल बदली रस्ते बदले
नज़रें बदली रिश्ते बदले
प्यार के वादे झूठे निकले
किससे करें अब शिकवे हम

साज़ नही आवाज़ नही है
गाने का अदाज़ नही है
अपने लिखे पर नाज़ नही है
कैसे कहे अब हाले गम

एक धुआं है दिल की कहानी
खाक मे मिल गये प्यार जवानी
रास ना आई ये ज़िन्दगानी
सह न सके फुकत के गम

है अपनी तकदीर का मातम
जिनका भरते थे अज़ीज़ दम
वो ही हमे कहते हैं दुश्मन
कैसे उन्हे समझायें हम



हसरत कोई बाकी रहती
कितना अच्छा होता
सावन मे बरसात ना होती
कितना अच्छा होता

गर्मी मे तुम चल कर आते
प्यासे होठ लिये तो
पानी पीकर प्यास ना बुझती
कितना अच्छा होता

होठो के मिलने से पहले
दरवाजें खुल जाते
मिलने की ख्वाहिश तो रहती
कितना अच्छा होता

मजबूरी मे बैठे बैठे
रात बसर हो जाती
वहशत सी एक तारी रहती
कितना अच्छा होता

याद नही कब आपसे
पहले प्यार हुआ
सूरत जानी जानी सी थी
जब दीदार हुआ

दूर कही एक परछाई सी
अपने पास बुलाती थी
मैं जितना बढता उस जानिब
वो आगे बढ जाती थी

मुद्दत से वो आँख मिचोनी
मुझको खेल खिलाती थी
तुम मे वो छाया ढल आई
ख्वाब से मैं बेदार हुआ

दूर यहाँ से तन्हाई मे
साथ तुम्हारे जाना है
जो गुज़रा वो वक्त पुराना
फिर उसको लौटाना है

जो कुछ तुमको याद नही है
वो सब याद दिलाना है
कह दूँ दिल का राज़ तुम्ही से
मुझको ये एतबार हुआ

दूर नही रह जाती मजिल
जब दो राही साथ चलें
आँखो मे आँखें डाले
हाथों मे बांधे हाथ चलें

प्यार मुहब्बत और जवानी
की बातो पे बात चलें
जन्नत पा ली आज जो तुमसे
चाहत का इज़हार हुआ



कैसे कहूँ कभी कभी कितना आपसे
हाय तडप उठता हूँ मैं मिलने के वास्ते

मैं क्या जानू कौन हो तुम कौन तुम्हारा मैं
कैसे राही दो राहो के चलने लगे एक रास्ते

पुरवाई जब तन को छूकर गुन गुन गाती जाये
पट से खुलने लग जाते हैं एक भूली सी याद के

या तो अब पहचान लो मंजिल या राहो को मोडो
बेगाने मे कब तक ऐसे चलते रहें चुपचाप से



हम तुमसे बिछुड जायेगे
और दूर चले जायेंगे
फिर कहो तो मिलने पर भी
पहचान ना पायेंगे

बन्धन हैं ये जन्मो के तोडे नही टूटेंगे
रिश्ते ये महौब्बत के छोडे नही छूटेंगे
तुम जितना भुलाओगे ये प्यार भरे नगमे
साँसो की सदा बनकर याद और भी आयेंगे

किस्मत ने जो खेला है वो खेल अधूरा है
अफसाना मुहब्बत का आधा है ना पूरा है
इस प्यार के तूफाँ का तूफाँ हो किनारा है
खुश हो के डुबो दो तुम हम डूब भी जायेंगे



तुम ही मेरा जीवन हो तुम मेरा ससार
बोलो भी क्या दे सकते हो कुछ थोडा सा प्यार

मांग रहा हूँ सुख के दो पल दुख की राहो मे
छाया चाहने वाले का क्या तरुवर पे अधिकार

किस चिन्ता मे डूब गये हो सुन कर प्रश्न मेरा
जो कुछ भी ना देना चाहो कर दो अस्वीकार

बरखा आई तुम ना आये फिर भी समझूगा
गहरी नदियाँ दूर सँवरिया बेबस हैं उस पार

तुम बादल मैं प्यासा पपीहा आस लगाये रे
सावन सूखा जाये भादो तो बरसेगा हार

सागर की गहराई मे ज्यू नदिया सो जाये
अपनी बाहो मे सो जाने दो प्रीतम एक बार



छोड़ जाना था जो यूं फिर क्यूं मुहब्बत की थी
या इसी दिन के लिए इतनी इनायत की थी

प्यार बहलावा है नही कोई दिखलावा है नही
और भुलावा भी नही फिर क्यूं ये जहमत की थी

दोस्ती थी ना तुम्हे दुश्मनी भी तो नही
यूं ही सताने को मुझे बस क्या शरारत की थी

इश्क कोई खेल नही, दो दिनो का मेल नही
कब से ना जाने तुमको पाने की हसरत की थी

भूले भूले से हो क्यूं याद क्या कुछ भी नही
साथ जीने के लिए हमने इबादत की थी

गर गुनहगार हूँ मैं मेरा गुनाह माफ करो
मैंने तसव्वुर इन्ही बाहो मे जन्नत की थी

कैसे भूलूगा अजीज़ आपके अहसानो को
मेरे जज़बात की बस आपने इज्जत की थी



निकले थे वफा की राहो पर
अजामे वफा मालूम ना था

हम दुनिया लुटा देंगे अपनी
तुम दोगे दगा मालूम ना था

दीवाना था दिल दीवाने थे हम
रुकते ही ना थे बेचैन कदम

धुधला सा खयाले मजिल था
मजिल का पता मालूम ना था

गिर गिर के उठे उठ उठ के गिरे
ढूढा तो बहुत साथी ना मिले

ढूढेगा ना कोई भी हमको
भटकेंगे सदा मालूम ना था



नही है कोई मेरा गम की काली रात आई
जलाने और मेरा दिल ये तेरी याद आई

सुनाऊँ किसको मैं जाकर के हाल अब अपना
ज़माना मुझसे ख़फ़ा बन के मौत रात आई

अजीब है ये मुहब्बत की ज़िन्दगी मेरी
के साथ तेरे ना तेरे बगैर रास आई

तड़प के आज शबे गम पुकारती है तुझे
कहाँ गया ए मेरे चांद चांदरात आई

बरस के आज घटा ने रूला दिया है अज़ीज
भुलाया लाख जिसे वो ही याद बात आई



मेरी वीरान दुनियां मे सहारा बन के तुम आये
अंधेरा ढल गया गम का उजाला बन के तुम आये

तूफानो के थपेड़ो से ना थी उम्मीद बचने की
शिकस्ता थी मेरी कश्ती किनारा बन के तुम आये

बहारें ले के तुम आये बहारें बन के तुम आये
खिजाये फिर गई दिलकश नजारा बन के तुम आये

भटक कर खो गया था मैं तो अपनी राहे मंजिल से
मुझे फिर राह दिखलाने सितारा बनके तुम आये

मैं था बेज़ार घबराया हुआ दुनियां से ए अजीज
मुझे फिर जिन्दगी देने दिलासा बनके तुम आये



छोड कर दुनियाँ कहीं मैं
दूर जाना चाहता हूँ
भूलने वालों को मैं भी
भूल जाना चाहता हूँ

बेपनाह हूँ बे सहारे
घुट गये अरमान सारे
रोते रोते भर गया दिल
मुस्कुराना चाहता हूँ

टूटी है पतवार अपनी
और किनारा दूर है
गम की मारी ज़िन्दगी से
डूब जाना चाहता हूँ

मेरी हालत पे तरस
खाकर ना रोना कोई भी
जान देकर इश्क का
रुत्बा बढाना चाहता हूँ



दो चार दिन ये प्यार के हस कर गुज़ार ले
दो चार दिन बहार ये गाकर गुज़ार ले

हँसती हुई शमा परवाने से कह रही है
दो चार पल तो साथ ये जल कर गुज़ार ले

दिल के सुरो पे नगमे गा ले तू झूम के
दिल मे किसी की नाचती सूरत उतार ले

ये रात चांदनी सुन धीरे से कह रही है
दो चार दिन दो चार ही अरमाँ निकाल ले

बोतल मे है अज़ीज़ अब बोतल का ही नशा
आखो से दिलरुबा की मस्ती ले प्यार ले

वफा है नाम महोब्बत का वफा से प्यार किये जा
वफा है जाम महोब्बत का तू जाँ निसार किये जा

उठा ले हर जुलुम उनका, उठा ले हर सितम उनका
ना शिकवा कर कोई गम का गमो से प्यार किये जा

सतायें वो चाहे जितना रुलायें वो चाहे जितना
रजा मे उनकी ही जीना रजाये यार किये जा

अगर जलने से तेरा दिल चैन कुछ उनको जाये मिल
तो कर ले तू भी कुछ हासिल, शमा से प्यार किये जा

अजीज आयेगा वो दिन भी खुदा की जब होगी मर्जी
वो लायेगा तुझ पे दिल भी तू शुक्रे यार किये जा



दो चार दिन ये प्यार के हस कर गुज़ार ले
दो चार दिन बहार ये गाकर गुज़ार ले

हँसती हुई शमा परवाने से कह रही है
दो चार पल तो साथ ये जल कर गुज़ार ले

दिल के सुरो पे नगमे गा ले तू झूम के
दिल मे किसी की नाचती सूरत उतार ले

ये रात चाँदनी सुन धीरे से कह रही है
दो चार दिन दो चार ही अरमाँ निकाल ले

बोतल मे है अजीज अब बोतल का ही नशा
आँखो से दिलरुबा की मस्ती ले प्यार ले

वफा है नाम महोब्बत का वफा से प्यार किये जा
वफा है जाम महोब्बत का तू जाँ निसार किये जा

उठा ले हर जुलुम उनका - उठा ले हर सितम उनका
ना शिकवा कर कोई गम का गमो से प्यार किये जा

सतायें वो चाहे जितना रुलायें वो चाहे जितना
रज़ा में उनकी हो जीना रज़ाये यार किये जा

अगर जलने से तेरा दिल चैन कुछ उनको जाये मिल
तो कर ले तू भी कुछ हासिल, शमा से प्यार किये जा

अजीज़ आयेगा वो दिन भी खुदा की जब होगी मर्जी
वो लायेगा तुझ पे दिल भी तू शुक्रे यार किये जा



बरसात आई छाई घटाये
तेरी याद लेकर आई हवाय

ठडी फुहारें आने लगी है
मुहब्बत के नगमे सुनाने लगी हैं
ये जी चाहता है तेरे पास आऊँ
सुनाऊँ गमे दिल की तुझको आहे

रिमझिम की धुन मे झूमी हैं शाख
बढी दिल की धडकन भर आई आखें
ये जी चाहता है तू और मैं हो
बातें करें फिर मिलके निगाहे



*हम कभी सोते कभी जागते हैं

रात कटती ही नही
नीद आती ही नही
याद दिल से आपकी क्यू
हाय जाती ही नही
मूद पलकें हम भी दम भर
होश खोना चाहते है

गम की इन तारीकियो मे
ढूढती हैं तुमको आखे
दिल की इन तन्हाईयो मे
धडकनें भरती हैं आहे
आपकी जुल्फो के साये
मे बसेरा चाहते है

किस तरह रातें गुजरती
जागते तारो से पूछो
दिल की हालत दिल के मालिक
डूबती आँखो से पूछो
आपके आगोश मे सर
रख के सोना चाहते हैं

थक के जब आँखें झपकती
जिन्दगी करवट बदलती
काली काली रात ढलती
चाँद की बारात सजती
फिर नही हम ख्वाब की
दुनियाँ से आना चाहते हैं



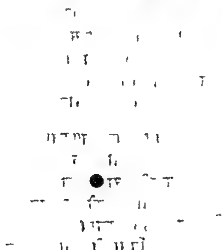
तेरी खुशी की खातिर मैंने अपनी खशी लुटा दी
तूने अरे ओ वेवफा दुनियाँ मेरी मिटा दी

तेरी कसम तेरे लिए क्या क्या किया ना मैंने
सोचा ना समझा तूने मेरे गम की हँसी उड़ा दी

भर आई आँख दद से लगती है चोट दिल पे
थी कौन सी खता जो तूने इतनी बडी सजा दी

किस्मत ने दी दगा मुझे तुझसे कोई गिला नहीं
जा खुश रहे सदा तू मेरे दिल ने तुझे दुआ दी

तेरा अजीज दद तो बढता ही जा रहा है
जाने ना देने वाले ने कैसी तुझे दवा दी



अरे इन्सान दुनिया से
तेरा दो पल का नाता है
भलाई कर भला होगा
किसी को क्यू सताता है

सहारा छीन के कमजोर का
तुझको मिलेगा क्या
बता दुनिया किसी की लूट के
तुझको मिलेगा क्या
है तुझसे भी बड़ा कोई
ये दिल से क्यू भुलाता है

मुहब्बत करने वाले
जान देने से नही डरते
मुहब्बत के लिए कुर्बान हो
जाते है हँस हँस के
है वो नादान दीवाना
जो इनपे जुल्म ढाता है

किसी बेकस की आहो से
ना खेलो होश मे आओ
अरे इज्जत के रखवालो
ना इतना जोश मे आओ
जो टकराता है साहिल से
वो तूफाँ चोट खाता है



सोलह सिंगार जसाये
चल पड़ी अकेली हूँ
मेरा पिया नहीं है कोई
मैं दुल्हन अलबेली हूँ

पीपल वो पराये घर मे
जाने ना प्रीत की रीत
अपने आँगन से झाकू
मैं बेल चमेली हू

तड़पूगी यू ही जीवन भर
बेकल नदिया सी मैं
समझेगा ना कोई मुझको
मैं एक पहेली हूँ

जन्मो की कहानी हूँ मैं
सब रूप धरे मैंने
पाने को पिया परमेश्वर
हर दुख से खेली हूँ

है अग अग मे अग्नि
ज्वाला यौवन तन मे
चाहूँ ससार जला दू
मैं नार नवेली हूँ

जी चाहे बदन मे भर लू
ससार का सुख सागर
मैं धरा मेघ प्रीतम की
क्या करूँ सहेली हूँ



जीवन के रास्ते पे जब मोड आयेंगे
हम जानते थे हम दम सब छोड जायेंगे
लेकिन उमीद ऐसी हरगिज़ ना थी हमे
के आप भी हमारा दिल तोड जायेंगे

एक बार फिर से हमको अपना के देखिये
थोडी सी तो मुहब्बत जतला के देखिये
ठुकरा के बेरुखी को पास आ के देखिये
गुज़रा हुआ ज़माना हम मोड लायेंगे

माना रगीन होगी गैरो की सोहबतें
हमसे हसीन होगी औरो की सूरतें
भूलो ना हममे भी हैं अपनी ही सीरतें
कदमो को आपके फिर हम मोड लायेंगे

तडपा के हमको देखे वो जायेंगे कहाँ
पमाना आरज़ू का छलकायेंगे कहाँ
हम भी लिये चलेंगे अश्को का कारवाँ
हम जाने जाँ को जाँ से फिर जोड लायेंगे



इस पतझड तुम लौट न आये
तन मन आग लगा लूंगी

तुम ना प्यास बुझाओगे तो
मैं प्यासी मर जाऊँगी

सूखा पत्ता जो डाली से
धरती पर गिर जायेगा

याद मे तेरी मेरा जीवन
एक दिन कम हो जायेगा

जब पत्ता ना कोई बाकी
वृक्षो पर रह जायेगा

मेरी काया निश्चल होगी
और सूरज ढल जायेगा

साझ ढले भी तुम ना आये
दुल्हन देह सज जायेगी

जब डोली लेने आओगे
डोली तो उठ जायेगी



उठा बोतल पिला साकी ना खाली जाम हो जाये
दिवाना पी के जायेगा तुझे मालूम हो जाये

बडी चाहत से मैंने आज अपना घर सजाया है
कही ऐसा ना हो उसको कही फिर काम हो जाये

रफीके मन ए जाने मन कभी इतना करम कर दे
मेरे पहलू मे भी तेरी किसी दिन शाम हो जाये

मुझे इन बस्तियो से दूर मेरे दिल कही ले चल
के बरबादी का ना मेरी नजारा आम हो जाये

पशेमां हूँ के क्यू कर बात मैं उससे करूँ जाकर
अजीज ऐसा ना हो मासूम वो बदनाम हो जाये

चल दूर चल
चल नदिया के उस पार
चल दूर चल

चन्दा से दूर चल
तारों से दूर चल
भूल कर दुनिया को चल
छोड़ कर दुनिया को चल
चल दूर चल

चलता जा तू एक चाह ही
गाता जा तू एक राग ही
बांध हृदय में एक आस तू
प्रेम नगर से दूर चल
चल दूर चल

सागर की गहराई से
पर्वत की ऊँचाई से
दूर तेरी मंजिल हो वहाँ
पृथ्वी ना आकाश जहाँ
चल दूर चल



प्रेम अगन मे दीप जले
और साथ जलें परवाने
दीपक की ज्वाला हरने को
जतन करें दीवानें

प्रेम की कैसी सीख है देखो
जीना विलग ना चाहे देखो
प्रेम विवश सब तन मन वारें
मगन जलें मस्ताने

प्रेम की कैसी डोर बंधी है
मर मिटने की होड लगी है
प्रेम को जीवन भेंट चढाकर
अमर बनें अनजाने



सावन बीत गयो
संग संग मीत गयो

भादो की बरखा सताये
अंखियाँ नींद ना आये
गाऊँ बिरहा राग पिया संग
सुख संगीत गयो

पगला मनवा ना माने
टोकूँ तो देवे है ताने
रैन दिवस पी की रट लागी
बैरी ढीठ भयो

सावन बीत गयो — सावन बीत गयो

हम तेरी दुनियाँ मे आये बेकार
ना दौलत मिली ना मिला हमे प्यार

जो दी थी गरीबी तो दिल क्यू दिया
जो दिल भी दिया था तो गम क्यू दिया
गम मिला हमको मिला ना गमख्वार
ना दौलत मिली ना मिला हमे प्यार

ये इन्साफ कैसा है तेरा खुदा
गरीबो से अकसर तू रहता खफा
हमने सुना था तू है सबका यार
ना दौलत मिली ना मिला हमे प्यार

नजर मे जमाने की हम हैं बुरे
जो माँगे मुहब्बत तो नफरत मिले
दम भी न जाये ना आये करार
ना दौलत मिली ना मिला हमे प्यार



आ जा मोरे बालम सावन भी आ गया
गरज घटा शोर करे जियारा ललचा गया

उमड उमड घुमड घुमड
छाई रे बदरिया
रुनक झुनक छुमक छुमक
बाजे रे पायलिया
दद करेजवा मे उठे
बदरा लहरा गया

लहर लहर घूम घूम
गाये मस्त गीत रे
पवन चले झूम झूम
आ जा मोरे मीत रे
फरर फरर चुनरी उडे
अग अग बल खा गया



तेरा हुस्नो जमाल देख लिया
हाल अपना बेहाल देख लिया

गमे फुर्कत से मौत बेहतर है
जीने वालों का हाल देख लिया

तेरे कदमों से दूर जाने वफा
जिन्दगी है मुहाल देख लिया

थाम हम दिल को बैठ ही तो गये
जलवा जो बेमिसाल देख लिया

तेरा रुखसार जब भी देखा कहा
आ गई ईद हिलाल देख लिया

इश्क बस एक बवाले जाँ है अजीज
किसको होते निहाल देख लिया

●

प्यार करना तो निभाना '
'दिल किसी का ना दुखाना
दुख पडे तो मुस्कुराना
ये गाना मेरे प्यारो' भुलाना नही

बचपन तो हस खेल कद मे ही जायेगा
तुम होगे नौजवान वो दिन भी आयेगा
हर सास मस्तियों के गीत गुनगुनायेगी
दिल की उमग जाने क्या क्या गुल खिलायेगी
नाजुक वो उमर होगी तुम होश न गवाना
ये गाना मेरे प्यारो भुलाना नही

पूरी भी होगी हसरतें मिट भी जायेगी
कुछ चादनी तो कुछ अँधेरी रातें आयेंगी
ये जिन्दगी मे धूप छाव यू ही चलेगी
एक राह बन्द होगी नई राह खुलेगी
मजिल पे पहुचना है हिम्मत न हार जाना
ये गाना मेरे प्यारो भुलाना नही

फिर आ के एक बार जवानी भी जायेगी
बीते हुए दिनो की बहुत याद आयेगी
बचपन की सुहानी शाम याद करोगे
बच्चो को सुनाओगे ठडी आहे भरोगे
होगे ना मगर पास हम होगा ये गाना
ये गाना मेरे प्यारो भुलाना नही

●

प्यार की रस्मे निभा सकोगे
प्यार से पहले बोलो
आज की कस्मे भुला ना दोगे
प्यार से पहले बोलो

सब कुछ ही जो माँग लिया तो
हँसते हँसते दोगे
दुनिया अपनी लुटा सकोगे
प्यार से पहले बोलो

दिल पर चाहे जो भी गुजरे
तुम खामोश रहोगे
राज के आँसू छुपा सकोगे
प्यार से पहले बोलो

फुर्कत की लम्बी रातो मे
तारो की छाया मे
याद हमारी किया करोगे
प्यार से पहले बोलो

किस्मत ही जो साथ छुडा दे
वादा आज करो तुम
फिर मिलने की दुआ करोगे
प्यार से पहले बोलो

●

ग्रा देख ले तू जीता हू मैं
खामोश ग्रांसू पीता हू मैं

तेरी दुनियां छोड कर मैं
जिन्दगी चाहता नही
तुझसे रहबर दूर मुझको
चैन अब ग्राता नही
तेरी बात तेरी यादें
दिल भुलाना चाहता नही
ग्रा देख ले तू

मेरी हसरत मेरी उल्फत
दुख भरी है दास्तां
मैं दीवाना हू बेगाना
बेकसी जाऊँ कहां
मैं ग्रकेला दिल ग्रकेला
इतना बडा दुश्मन जहां
ग्रा देख ले तू

गर तू मुझको प्यार करके
ऐसे ठुकराता नही
सूनी राहो पर भटकता
छोड कर जाता नही
मैं तडपता सर पटकता
उफ जुबा पर लाता नही
ग्रा देख ले तू



मेरे दिल मे आ वसो तुम
मैं तुमको चाहता हू
छोटी सी आरजू है
दीदार चाहता हू

जब आप सामने हैं
दुनियाँ रंगीन है
मौसम ये रात का हर
आंचल हसीन है
धड़कन मे आ वसो तुम
मैं तुमको चाहता हू
छोटी सी

मदहोश हो गया हू
तुमको करीब पाकर
मशकूर हो गया हू
अहले नसीब पाकर
नस नस मे आ वसो तुम
मैं तुमको चाहता हू
छोटी सी

मस्ती भरी नजर से
मुझको सिखा दो पीना
जुल्फो के साये मे जी
लेने दो ऐ हसीना
साँसो मे आ बसो तुम
मैं तुमको चाहता हू
छोटी सी



आ देख ले तू जीता हू मैं
खामोश आसू पीता हू मैं

तेरी दुनियां छोड कर मैं
जिन्दगी चाहता नही
तुझसे रहकर दूर मुझको
चैन अब आता नही
तेरी बात तेरी यादें
दिल भुलाना चाहता नही
आ देख ले तू

मेरी हसरत मेरी उल्फत
दुख भरी है दास्तां
मैं दीवाना हू बेगाना
बेबसी जाऊँ कहा
मैं अकेला दिल अकेला
इतना बडा दुश्मन जहाँ
आ देख ले तू

गर तू मुझको प्यार करके
ऐसे ठुकराता नही
सूनी राहो पर भटकता
छोड कर जाता नही
मैं तडपता सर पटकता
उफ जुबां पर लाता नही
आ देख ले तू



मेरे दिल मे आ वसो तुम
मैं तुमको चाहता हू
छोटी सी आरजू है
दीदार चाहता हू

जब आप सामने हैं
दुनियाँ रगीन है
मौसम ये रात का हर
आंचल हसीन है
धडकन मे आ वसो तुम
मैं तुमको चाहता हू
छोटी सी

मदहोश हो गया हू
तुमको करीव पाकर
मशकूर हो गया हू
अहले नसीव पाकर
नस नस मे आ वसो तुम
मैं तुमको चाहता हू
छोटी सी

मस्ती भरी नजर से
मुझको सिखा दो पीना
जुल्फो के साये मे जी
लेने दो ऐ हसीना
सांसो मे आ वसो तुम
मैं तुमको चाहता हू
छोटी सी



मुझको अच्छा नही बुरा समझो
कुछ भी समझो ना बेवफा समझो

ये ही ख्वाहिश ये ही तमन्ना है
कभी मेरी भी इल्तजा समझो

तुम ही रोजा नमाज हो मेरे
मुझको आशिक ना मनचला समझो

किस का एतवार इस जमाने मे
बस खुदा का ही आसरा समझो

सब उसी के बनाये इसां है
क्यू किसी को बुरा भला समझो

वास्ता ये तो रूह से रूह का है
तुम भले ही मुझे जुदा समझो

मुह पे जो बात अजीज साफ कहे
आदमी उस को तुम खरा समझो

ए काश मेरी मुहब्बत मे वो, असर होता
के तेरे दिल मे फकत मेरा ही बसर होता

खुदा कसम जो तू मुझको भी कुछ समझ लेता
ये जिस्म जान क्या ईमां तेरी नजर होता

बस एक प्यार ही मे है खुदाई का जलवा
न होता प्यार तो दुनियां मे बस जहर होता

ना इस तरह से कुचलता किसी की ख्वाहिश को
जो राहे इश्क से तेरा कभी गुजर होता

अजीज और, इबादत मे कमी तेरी
वगरना क्यू रखे जानां, नही इधर होता



सरे श्राम मुझसे श्राकर मिलते है श्राप क्यू
फिर मेरी हरकतो से डरते हैं श्राप क्यू

करने को श्रौर भी हैं बातें जहान की
बस दूसरो की बातें करते है श्राप क्यू

कोठे फलाग कर मैं श्रा जाया करूगा
रुसवाई से परेशां होते हैं श्राप क्यू

गर हुक्म हो तो श्राप के कदमो मे श्रा रहू
तनहाईयो के सदमे सहते है श्राप क्यू

क्या श्रौर कोई श्रौर भी नजदीक श्रा गया
मुझ से श्रलग श्रलग से रहते ह श्राप क्यू

मैं श्रजीज हू दीवाना बस श्राप के लिए
दीवानगी प मेरी हसते है श्राप क्यू

दो रुखसत बहुत दूर जाना है हमको
गले से लगाये हुए अपने गम को

है फुर्सत कहाँ मौत को वो जो ठहरे
उसे आज ले के ही जाना है दम को

जुबा से, मजहब से खुदा दो न होगे
ना दिल मे जगह दो किसी भी वहम को

नही माँगने से मिलेगी मुहब्बत
मनाते रहो जिंदगी भर सनम को

अजीज आ ही जाएगी मंजिल मुकाबिल
बढाये चले जाओ अपने कदम को



इस कदर क्यू सताए जाते हो
याद आते हो आये जाते हो

जान लेकर यकीन आयेगा
क्यू हमे आजमाए जाते हो

रात छूने लगी सवेरे को
जाने दो क्यू रुलाये जाते हो

आओ बैठो करीब आ कर के
क्यू तकल्लुफ में आए जाते हो

हमको भी प्यार की जरूरत है
क्यू इबादत सिखाए जाते हो

हम तो मानिन्द एक पत्थर है
हमसे क्यू दिल लगाए जाते हो

तुमने छेडी थी प्यार की बाते
हम पे तोहमत लगाए जाते हो

रहने दो मत लगाओ सीने से
क्यू ये जहमत उठाए जाते हो

आ भी जाओ किसी बहाने से
क्यू बहाने बनाए जाते हो

हमसे करते हो गैर का चर्चा
और फिर मुस्कराये जाते हो

अभी हर शौक की तमन्ना है
क्यूं नमाज़ी बनाये जाते हो

यूं न आने की है कसम तुमको
क्यूं तसव्वुर में आए जाते हो

वो ना तुमको अज़ीज़ समझेंगे
यूं ही ख़ुद को, रुलाये जाते हो





दिल किस पे कब आ जाये मालूम किसे है
कब जाने खता खाये मालूम किसे है

हमने तो सुबह शाम उसे याद किया है
कब याद उसे आये मालूम किसे है

जज़बात तकल्लुफ मे ही रह जायें ना घुट के
कब रात गुज़र जाये मालूम किसे है

हैं यू तो बहुत साकी मयखाने शहर मे
तू ख़ूने दिल पिलाये मालूम किसे है

अल्लाह के करम का शुकराना कीजिये
बिगडी को कब बनाये मालूम किसे है

हम उसकी रह गुज़र पे बैठे है मुंतज़िर
वो अज़ीज़ ना भी आये मालूम किसे है



भूलने वाले तेरी याद भी आये क्यूं है
राह जो छूट गई उस पे बुलाये क्यूं है

मेरी खामोश वफा ने तो कभी उफ ना की
जाने ये अश्क मुझे आज रुलाये क्यूं है

तू कभी गैर सा लगता है ये किस्सा क्या है
मुझ से अच्छा है कोई और छुपाये क्यूं है

खाक बन कर भी तेरे गिर्द सिमट आऊंगा
गमे फुरकत में मुझे यार जलाये क्यूं है

ए अजीज आज जमाने की निगाहें बदली
तू गये वक्त को सीने से लगाये क्यूं है

चांद निकला मुबारकें पहोंचें
उनसे मिलने मसर्रतें पहोंचें

मजिलें इश्क पे दुआ बरसे
आस्मानो से रहमते पहोंचें

ए विरानो इधर चले आओ
उनकी महफिल मे रौनकें पहोंचें

हम भी नजरे बिछाये बैठे हैं
अर्ज पहोंचे गुजारिश पहोंचें

ईद आई अजीज ईद आई
उनके आने की आहटें पहोंचें



तुझे चांदनी की कसम चांद प्यारे
बुला कर के ले आ मेरे चांद को तू
तेरी चांदनी मे अगर सो गया हो
जगा कर के ले आ मेरे चांद को तू

तुझे वास्ता रौशनी से रहा है
मगर मेरे दिल मे अंधेरा रहा है
मेरे दिल का भी जो उजाले से भर दे
सजा कर के ले आ मेरे चांद को तू

है पाबन्दियाँ और मजबूरिया भी
यू चल कर के आने को है दूरिया भी
अगर थक के बैठा हुआ हो कही पर
उठा कर के ले आ मेरे चांद को तू

मुझे बदगुमानी ये ही खा रही है
के शायद उसे मेरी याद आ रही है
अकेले अगर रो रहा हो कही पर
हसा कर के ले आ मेरे चांद को तू

अजीज उसको आना था नजरें बचा के
मुहब्बत को रुसवाइयो से छुपा के
रुका हो अगर चांद डर चाँदनी से
छुपा कर के ले आ मेरे चांद को तू



चोरी चोरी दिल का लगाना बुरी बात है
दिल को लगा के पछताना बुरी बात है

दिल से दिल जब टकराता है
प्यार नजर मे शर्माता है
प्यार मे देखो शर्माना बुरी बात है
चारी चोरी

तीर नजर के जब चलते है
दिल मे शोले से जलते है
दिल की आग दबाना बुरी बात है
चोरी चोरी

छुपता है जब कोई नजर से
उठती है एक आह जिगर से
आहो से दिल को जलाना बुरी बात है
चोरी चोरी

हसते है जब चाँद सितारे
लुट जाते है दिल के मारे
दिल के मारो को तडपाना बुरी बात है
चोरी चोरी

फिल्म "बडा भाई"

किसी दिन किसी वक्त आना पडेगा
जनाजा हमारा उठाना पडेगा

मुहब्बत का एहसास होगा कभी तो
कलेजे से गम को लगाना पडेगा

हमारी कहानी तो है चन्द रोजा
तुम्हे हमसे मिलने ना आना पडेगा

ये रिश्ता गुमाने मुहब्बत का रिश्ता
मेरी जा ना तुमको निभाना पडेगा

कभी जिन्दगी से हमे थी मुहब्बत
गले मौत को अब लगाना पडेगा

है बेहतर हमे दूर ही से मिलो तुम
के अब दूरियो को बढाना पडेगा

हमे प्यार से यूँ ना देखो कसम है
जमाने को दुश्मन बनाना पडेगा

अकेले कही जाके मर जाये बेहतर
किसी को भी रोने ना आना पडेगा

अजीज आजमाइश नही तुमको जेबा
वफा मे खुदी को मिटाना पडेगा



क्या मिला तुमको बेवफा
लट के दुनिया मेरी
ऐसी क्या खता हुई बता

बोझ बन गई है जिन्दगी
कैसी की ये तूने दिल्लगी
क्यूं हसा के फिर रुला दिया
क्या इसी का नाम है वफा
क्या मिला तुझको बेवफा

दिल को ले के जाऊँ अब किधर
मौत ने भी फेर ली नज़र
हर तरफ अंधेरा छा गया
बुझ गया उम्मीद का दिया
क्या मिला तुझको बेवफ़ा

कह दे उनसे तू ही आस्माँ
मेरी बेबसी की दास्ताँ
तुझको मेरे गम का वास्ता
सुन ले मेरी दुख भरी सदा
क्या मिला तुझको बेवफा

फिल्म "नदिया धीरे बहो"

बिछडे साथी मिलेंगे गले—
होली लाई है फिर दिन भले

दुश्मन था दिल और जुदाई बुरी
थे अखियो मे आसू भरे
भरी खुशियो से झोली
सुख ले आई होली
मजिल पे राही मिले
बिछडे साथी

रग की फुआरें आई मधुर सदेशा लाई
चैन की बसी बजे
ढोलक की लै पे गोरी
गा ले मिलन की होरी
विरहा के दिन अब ढले।
बिछडे साथी



ोली खेलो रे रंग की पड़े फुहार
ोरी तेरे नैनो मे छलके है
ानवा का प्यार—होली खेलो रे

ोरे गोरे मुखड़े पे रंग गुलाबी रे
ाक तक तोरी छबी भये हम शराबी रे
ुझ पे ना देखा गोरी ऐसा निखार
होली खेलो रे

ीगी-भीगी जाऊँ रंग डारो न सजनवा
ररर-सरर कर रह जाये तनवा
ीत तुम्हारी भई मैं तो गई हार
होली खेलो रे



तेरी गली मे रग उडाता आया खेलने होली
अगर तू चाहे भर दे प्यार से दीवाने की झोली
गोरी हो हो हो गोरी हो होये

उम्मीदो की पिचकारी है और रग है प्यार का
तेरे द्वार पर खडा हुआ है दीवाना दीदार का
आई बहाना लिए सुहाना-२
मुलाकात का होली
अगर तू चाहे भर दे प्यार से दीवाने की झोली
गोरी हो हो हो

उलझन छोड चली आ बाहर
आज समाँ रँगीला
तेरे ख्वाब की दुनिया लेकर आया कोई छबीला
सजा रहा है रग-रग से-२
अरमानो की डोली
अगर तू चाहे भर दे प्यार से दीवाने की झोली
गोरी हो हो हो

ढोल बजे शहनाई गूजे बसी तान सुनाये
छम छम बरसे रग अग पे गोरी खडी लजाये
रूप निहारे ठगा-सा कोई-२
दिल की दुनिया डोली
अगर तू चाहे भर दे प्यार से दीवाने की झोली
गोरी हो हो हो—गोरी हो होये



मोरे मितवा को सँग लै के आइयो
मैया होरी मैं तो अब तोरी आस धरूँ
मेरो बिछडो कन्हैया मिलाइयो
मैया होरी मैं तो
अब तोरी आस धरूँ

फागुन लागा जागी मन मे ज्वाला
मोरा अग अग बना अगार
पल-पल लागे माने जुग-जुग जैसो—
बीती जाये जोबन की बहार
चोया चन्दन का चौक पुराईयो
मैया होरी मैं तो
अब तोरी आस धरूँ

घर-घर आँगन मे होली जले
मोरे मन विरहा की आग
मेरो पी परदेस गयो री सखी री
मैं किस सग खेलूँ फाग
मोरे अगना मे धान बुवाईयो
मैया होरी मैं तो
अब तोरी आस धरूँ।



होली आई मेरे यार होली आई रे
होली आई दिलदार होली आई रे

होली आई रे छमा छम रग बरसे
मेरा गोरी से मिलन को जिया तरसे
लगे दिल पे कटार होली आई रे

होली आई रे मिलन की ऋतु आई
गोरी हाथो मे गुलाल लिये छुप आई
छुपे कैसे मन का प्यार होली आई रे

कही दूर पे शहनाई गूज उठी
कोई दुल्हन नवेली झूम उठी
नाचे घुंघटा उतार होली आई रे।



होली, होली, होली आई रंग रंगीली होली
मेरा तन भीगा, मेरा मन भीगा
कोई बरसाये सावन भादो कोई बरसाये रोली
मेरा तन भीगा मेरा मन भीगा

ऐसी हवा चली फागुन की
झूम उठा जग सारा
जिसकी ओर नजर जाये
वो लागे प्यारा प्यारा
जिस मुखड़े को देखा उस पे सजी एक रंगोली
मेरा तन भीगा, मेरा मन भीगा   होली

देखो निकल पड़ी गलियों में
रंग वालों की टोली
कोई ना बच के जाये हमसे
हम खेलेंगे होली
भर लो भर लो आज प्यार से
भर लो अपनी झोली
मेरा तन भीगा, मेरा मन भीगा   होली

तू क्यूं दूर खड़ा परदेसी
आजा संग हमारे
मिल जाने दे रंग दिलों के
होली तुझे पुकारे
ऐसा अपना साथ है अब तो
जैसे दामन चोली
मेरा तन भीगा, मेरा मन भीगा

*

लो फिर आई होली बरस बाद यारो
हो जाये तराना कोई प्यार का
कोई मिल रहा है लिपट के गले से
मज़ा ले रहा कोई दीदार का।

तरसते दिलों की कहानी तो देखो
ये रगो मे डूबी जवानी तो देखो
गई इनजारो मे रातें हज़ारो
ये दिन आज आया है इजहार का
लो फिर आई होली

गुलालो के बादल उडायेंगे हम तो
तुम्हे आज अपना बनायेंगे हम तो
जी कह दो तुम्हे भी मुहब्बत है हमसे
ये दिन आज आया है इकरार का
लो फिर आई होली

अजब रग छाया गुलाबी-गुलाबी
समा हो गया भीगा-भीगा शराबी
मचा शोर बचके ना जाये कोई भी
ये दिन आज आया है इसरार का
लो फिर आई होली

मुहब्बत की तो दास्ताँ ही अजब है
ये रग जो खिला है गजब है, गजब है
ये मुझसे तो पूछो के तुम मेरी क्या हो
ये दिन आज आया है एतबार का
लो फिर आई होली



होली खेलो रे, होली खेलो
बाहो मे हमको ले लो रे
होली खेलो रे होली खेलो

ये दिन फिर आयेगा एक साल बाद
हो या ना हो फिर से मुलाकात
मौका है तन मन भिगो लो रे
होली खेलो रे होली खेलो

आप आये महफिल जवा हो गई
हर एक नजर दास्तां हो गई
नजरे मिला के तो देखो रे
होली खेलो रे होली खेलो"

चारो तरफ छाया एक रग आज
बजने लगे प्यार के सुर मे साज
नगमे मुहब्बत के छेडो रे
होली खेलो रे होली खेलो

*

सोने की पिचकारी लाय दे
सजन होली खेलूगी, बलम होली खेलूगी
टेसू का रग घुलवाय दे हो ओ
सजन होली खेलूगी, बलम होली खेलूगी

चादी के थाल मे लाल गुलाल हो हो ओ
नाचूगी ठुमके से ढोलक की ताल हो
लँहगे पे गोटा टकाये दे
सजन तेरी हो लूगी, बलम होली खेलूंगी

रग मे घुलवा दे चन्दन पिसाये के
सखियो को बुलवा दे टमटम भिजाय के
चुनरी मे मोती टकाये दे
सजन तेरी हो लूंगी, बलम होली खेलूगी ।



दुखड़े मिट जायेंगे दिन के सारे
आ गले लग जा होली है प्यारे

आज चन्दन की होली जली है
प्यार की चाँदनी-सी खिली है
रात सुख की ये कैसी भली है
डूबतों को मिले हैं किनारे

होली लाई है साथी पुराने
आ गये याद गुज़रे ज़माने
वो लगी आँख आँसू बहाने
कैसे दिलकश हैं रंगी नज़ारे

एक मुद्दत से थी ये तमन्ना
डोली लेकर के आ जाए सजना
गूंजे शहनाइयां मेरे अँगना
खेले होली सजन मेरे द्वारे।





प्रेम सक्सैना 'अजीज' का जन्म 4 नवम्बर 1930 को मेरठ में हुआ। बचपन में ही गुनगुनाने का शौक रहा जो आगे चल कर धीरे-धीरे शायरी में बदल गया। कुछ उम्दा शायरी और कुछ गले में साज होने के कारण 1956 में बम्बई जाने का मौका मिला। बम्बई में कुछ गीत फिल्मों के लिए रिकार्ड भी हुए तथा खूब बजे, किन्तु तभी रॉ फिल्म का इम्पोर्ट कुछ समय के लिये बन्द होने के कारण कुछ फिल्में पूरी नहीं हो सकीं तथा नयी फिल्म कुछ समय के लिये शुरू न हो सकीं। कुछ फिल्मी कुछ घरेलू हालातों के कारण बम्बई छोड़ कर वापस दिल्ली आना पड़ा। अभी भी पुरानी यादों को ताजा करने के लिये और कुछ शायराना अन्दाज होने के कारण कलम चल पड़ती है। शायरी के साथ साथ 'अजीज' ने कहानियाँ भी लिखी हैं। जिनमें फागुन का नशा ही नहीं एक पैगाम भी है जो अपने आप में एक सन्देश है।

आजकल एक मशहूर कम्पनी में प्रबंधक का कार्य भार संभाले हुये हैं।